R.N.I.- UP-
HIN/2001/3996
ISSN- 2581-6128

स्थापन दिवस के 24वें वर्ष में प्रवेश

संयम • संस्कार • सन्तुलन

शहर समता

शोध पत्र

(हिंदी साप्ताहिक)

www.shaharsamta.com

'कर्मक्षेत्र रणभूमि यही है, मानव हो तुम कर्म करो।
कर्म से कभी विमुख न रहना, मन में यह संकल्प करो।'-
उमेश श्रीवास्तव

संस्थापकः स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 श्रीमती साधना श्रीवास्तव
सम्पादकः उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

सम्मान स्मृति अंक

वर्ष 24 | अंक 36 | रविवार, इलाहाबाद, 23 फरवरी 2025 | पृष्ठ 4 | विशेषांक मूल्यः 3 रू0

संपादकीय

सम्मान स्मृति अंक

उमेश श्रीवास्तव

सुबह-सवेरे धरम-करम की बात सुनते बाबू जी,
दुनियादारी,समझदारी की नीति सिखाते बाबू जी ।
बाबू के ही आशीर्वाद से, फलते-फूलते हैं बच्चे ,
बड़े होकर वही समाज के बनते हैं सच्चे-सच्चे ।

तो आज है कन्हैया लाल स्मृति साहित्य सम्मान समारोह का तीसरा पड़ाव। दो पड़ाव के बाद, आज तीसरे पड़ाव पर भी वही उत्साह, उमंग है, जो पहले पड़ाव पर था। खुशी की बात यह है कि शहर समता विचार मंच , निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर है। संस्था से जुड़े हजारों रचनाकारों का, मैं इस बात के लिए धन्यवाद करता हूं कि वह संस्था के हर संघर्ष की घड़ी में, संस्था के साथ एकजुट होकर, संस्था के हित के लिए सोचते है ।

संस्था हित के खातिर ,
देते हैं अपना हित छोड़ ।
सच्चे साहित्य अनुरागी है सब ,
सबका मन है कोमल चित्त ।

इस तीसरे सम्मान समारोह में भी पांच विभूतियों को सम्मानित किया जा रहा है । असिस्टेंट प्रोफ़ेसर हिन्दी इलाहाबाद विश्वविद्यालय के डॉ विनम्र सेन सिंह को उनकी कृति 'कलम आज उनकी जय बोल', रंजन पाण्डेय को उनके उपन्यास 'कोटा फीवर' अनवार अब्बास नकवी को उनके नाटक 'दहा दशाहर' पर डॉक्टर प्रदीप चित्रांशी को उनके कहानी संग्रह 'तिनका तिनका बिखर गया' और रचना सक्सेना को उनके काव्य संग्रह 'छंद रचना' के लिए सम्मानित किया जा रहा है। संस्था आप सभी के सुंदर भविष्य की कामना करता है ।

अंत में

सम्मानित पंचों को अनेक अनेक धन्यवाद ,
साहित्य क्षेत्र में गढ़ते रहे नए-नए इतिहास ।

हिंदी नाटक की यात्रा के अविस्मरणीय क्षण

भोलनाथ कुशवाहा

यह सर्व ज्ञात है कि हिन्दी नाटकों को संस्कृत नाटकों की समृद्ध परम्परा का विस्तृत फलक विरासत में मिल ा है।भरतमुनि का नाट्य शास्त्र इस बात की गवाही देता है कि भारतवर्ष में रंगमंच का विकास ईसा से कई वर्षों पूर्व हो चुका था।कुछ विद्वान नाटक की व्युत्पत्ति में यूनान के महत्व को स्वीकार करते हैं जबकि अधिकांश नाटक के उद्भव के लि ए भारतीय परिवेश को ही प्रमुखता देते हैं।ध्यान दिया जाय तो ईसा से चार-पाँच सौ वर्ष पहले वाल्मीकि कृत 'रामायण' , बौद्ध-जैन ग्रंथों में नटों के नामों,रंगशालाओं और नर्तकियों के उल्लेख मिलते हैं।

यह सर्व ज्ञात है कि हिन्दी नाटकों को संस्कृत नाटकों की समृद्ध परम्परा का विस्तृत फलक विरासत में मिल ा है।भरतमुनि का नाट्य शास्त्र इस बात की गवाही देता है कि भारतवर्ष में रंगमंच का विकास ईसा से कई वर्षों पूर्व हो चुका था।कुछ विद्वान नाटक की व्युत्पत्ति में यूनान के महत्व को स्वीकार करते हैं जबकि अधिकांश नाटक के उद्भव के लि ए भारतीय परिवेश को ही प्रमुखता देते हैं।ध्यान दिया जाय तो ईसा से चार-पाँच सौ वर्ष पहले वाल्मीकि कृत 'रामायण' , बौद्ध-जैन ग्रंथों में नटों के नामों,रंगशालाओं और नर्तकियों के उल्लेख मिलते हैं।

लोक रंगमंच के कारण सत्रहवीं शताब्दी में हिंदी में कुछ पद्ययुक्त संवाद प्रधान नाटकों की शुरुआत हुई।हृदयराम का हनुमान्नाटक', प्राणचंद चौहान का रामायण महानाटक,बनारसीदास विरचित समय सार नाटक ,प्रबोध चंद्रोदय तथा उन्नीसवीं शताब्दी में माधव विनोद नाटक, जानकी रामचरित नाटक,रामलीला विहार नाटक,प्रद्युम्न विजय नाटक तथा नहुष आदि अनेक पद्यबद्ध नाटकों की रचना आधुनिक युग के आने से पहले हो चुकी थी। हिन्दी नाटक के उद्भव और विकास की सत्यता यही है कि पारम्परिक दौर में जो नाटकनुमा प्रस्तुतियाँ हुईं वे हिन्दी नाटकों के विकास के लिए आधार पीठिका का काम करती हैं।

इसमें कोई संदेह नहीं कि हिन्दी नाटक का वास्तविक प्रारम्भ भारतेंदु युग से ही हुआ है।सन् 1853 ई में नवाब वाजिदअली शाह के दरबार में 'इंद्रसभा' नामक नाटक अभिनीत किया गया।यद्यपि यह उर्दू शैली में लिखा गया था किन्तु कतिपय विद्वान इसे हिन्दी का प्रथम नाटक मानते हैं।
हालांकि इसके बाद लिखे गए नाटकों में भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाटकों को विशेष महत्व
मिला।इसके पूर्व अनुवाद के रूप में भी कई नाटक उल्लेखनीय हैं।अभिज्ञान शाकुंतलम् का हिन्दी अनुवाद राजा लक्ष्मण सिंह द्वारा किया गया।
'शकुंतला' हिन्दी नाटक को खड़ी बोली में लिखा गया पहला नाटक माना जाता हैं।भारतेंदु हरिश्चंद्र ने भी अपनी रचना 'कालक्रम' में 'नहुष' को हिन्दी का प्रथम और 'शकुंतला' को द्वितीय तथा 'विद्यासुन्दर' को तृतीय नाटक स्वीकार किया है दशरथ ओझा के 'गाय कुमार रास' को हिन्दी का पहला नाटक माना है।यह तेरहवीं सदी में लिखा गया था।

हिन्दी नाटकों के विकास क्रम का अध्ययन करने हेतु उसे तीन कालों में विभाजित किया गया है-(1) भारतेंदुयुगीन नाटक(1857 से 1900 ई तक),(2) प्रसादयुगीन नाटक(1900 से 1950 ई तक,(3) प्रसादोत्तर हिन्दी नाटक (1950 के पश्चात)।

भारतेंदु युग में मौलिक और अनूदित दोनों प्रकार के नाटक बहुत अधिक संख्या में लिखे गए।बँगला,संस्कृत और अँग्रेजी भाषा से अनूदित नाटकों ने हिन्दी नाटकों को नई दृष्टि प्रदान की।हिन्दी में नाट्य रचना का सूत्रपात हुआ।भारतेंदु ने संस्कृत,बँगला और अँग्रेजी नाटकों का पर्याप्त अनुवाद किया।साथ ही हिन्दी में मौलिक नाटकों की भी रचना की।उदाहरण के लिए- विद्यासुंदर(1608), रत्नावली(1868),धनंजय विजय(1823), कर्पूर मंजनी(1875),पाखंड विडंबन(1872), मुद्राराक्षस(1878), दुर्लभबंधु(1880) आदि अनूदित और वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति (1873),सत्य हरिश्चंद्र(1875), श्री चंदावली (1876),विषस्य विषमौषधम (1876),भारत दुर्दशा(1880),नील देवी (1881),अंधेर नगरी (1881),सती प्रताप(1883),प्रेम जोगिनी (1875),भारत जननी(1877) आदि मौलिक नाटकों की रचना की।

> **भारतेंदु युग में मौलिक और अनूदित दोनों प्रकार के नाटक बहुत अधिक संख्या में लिखे गए। बँगला,संस्कृत और अँग्रेजी भाषा से अनूदित नाटकों ने हिन्दी नाटकों को नई दृष्टि प्रदान की।हिन्दी में नाट्य रचना का सूत्रपात हुआ। भारतेंदु ने संस्कृत,बँगला और अँग्रेजी नाटकों का पर्याप्त अनुवाद किया।साथ ही हिन्दी में मौलिक नाटकों की भी रचना की।**

वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति में उन्होंने धर्म के नाम पर की जाने वाली पशु बलि का विरोध किया तो विषस्य विषमौषधम में देशी राजाओं की दुर्दशा का चित्रण किया है।भारतेंदु के नाटकों में राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना का नवोन्मेष मिलता है।उनके नाटक जन कल्याण की भावना से ओतप्रोत हैं।उस युग के अन्य नाटककारों में ल ाला श्रीनिवास दास,राधाकृष्ण दास,बाल कृष्ण भट्ट,राधाचरण गोस्वामी, गोपाल राम गहमरी,किशोरीलाल गोस्वामी आदि प्रमुख नाटककार थे।विषय वस्तु की दृष्टि से इनके नाटकों में पौराणिकता, ऐतिहासिकत ा,सामाजिकता, राष्ट्रीयता और प्रेम का स्वर प्रधान रहा।प्रहसन भी लिखे गये।नाटकों का मंचन भी खूब हुआ।राधाचरण गोस्वामी ने प्रहसनों के लेखन में खूब नाम कमाया।उनके प्रहसन 'तन मन धन गोसाई जी के अर्पण में' धर्मगुरुओं की छद्मल ीलाओं का पर्दाफाश हुआ है तो दूसरे प्रहसन 'बूढ़े मुँह मुहासे लोग देखे तमाशे' में पर-स्त्री गमन की बुराइयों को उजागर किया है।उनका 'अमर सिंह राठौर' नाटक बहुत प्रसिद्ध हुआ।इसी परम्परा में पांडेय वेचन शर्मा उग्र के नाटकों को भी रखा जा सकता है।उनके प्रहसन 'चार बेचारे' और 'उजबक' खूब मशहूर हुए।

भारतेंदु काल में हिन्दी नाटकों को जो साहित्यिक भूमिका मिली उसे जयशंकर प्रसाद ने आगे बढ़ाया।प्रसाद जी के नाटकों के लिए कहा गया है कि वे पाठ्य अधिक थे अभिनेय कम।प्रसिद्ध समालोचक डॉ गोपाल राय ने कहा-'प्रसाद जी की कठिनाई यह थी कि वे जिस प्रकार का नाटक लिखना चाहते थे उनके अनुरूप रंगमंच हिन्दी में नहीं था।हिन्दी का शौकिया रंगमंच नितांत अविकसित था फलतः प्रसाद ने साहित्यिक रंगमंच की स्वयं कल्पना की और इस मानसिक रंगमंच की पृष्ठभूमि में अपने नाटक लिखे।जयशंकर प्रसाद को प्रमुखरूप से ऐतिहासिक नाटककार माना गया।उनके नाटकों में भारतवर्ष के अतीत का गौरवगान तो है ही,राष्ट्रीयता की भावना भी है।अपने नाटक 'विशाख' की भूमिका में उन्होंने लिखा है-'मेरी इच्छा भारतीय इतिहास के अप्रकाशित अंश में से उन प्रकांड घटनाओं का दिग्दर्शन कराने की है,जिन्होंने हमारी वर्तमान स्थिति बनाने का बहुत कुछ प्रयास किया है।' प्रसाद जी के मुख्य नाटक हैं- विशाख(1921),अजातश त्रु(1922), कामना (1924 प्रकाशन1927),जनमेजय का नागयज्ञ(1926),स्व ंदगुप्त(1928),एक घूंट(1930),चंद्रगुप्त(1931), ध्रुवस्वामिनी(1933)। उनके तीन नाटक स्कंदगुप्त,चंद्रगुप्त और ध्रुवस्वामिनी कल ात्मकता की दृष्टि से उत्कृष्ट हैं।उनके नाटकों में इतिहास और कल्पना का अद्भुत और सफल समन्वय है। ध्रुवस्वामिनी में नारी समस्या को प्रस्तुत किया गया है।तल ाक और पुनर्विवाह प्रमुख मुद्दे हैं।

नाट्यशिल्प की दृष्टि से प्रसाद जी के नाटक बेजोड़ हैं।उनके नाटकों में कथावस्तु,गीत योजना,रस योजना,उदात्त नायक, विदूषक आदि भारतीय नाट्यकला से लिए गये हैं तो कार्य-व्यापार,अंतर्द्वंद्व,संघर्ष जैसे तत्व पाश्चात्य नाट्यकला से लिए गये हैं।प्रसाद प्रयोगधर्मी नाटककार थे।प्रसादयुग के अन्य नाटककारों में हरिकृष्ण प्रेमी,लक्ष्मीनारायण मिश्र,सेठ गोविंददास,गोविंदवल्लभ पंत,उपेंद्र नाथ अश्क,वृंदावनल

...शेष पृष्ठ 2 पर

सम्मान स्मृति अंक

साप्ताहिक शहर समता

हिंदी साहित्य विधा में आलोचना

डॉ अरुण कुमार मिश्रा

हिंदी साहित्य विधा में आलोचना के प्रवेश से पूर्व आलोचना का प्रादुर्भाव संस्कृत काव्यशास्त्र में भी देखा जा सकता है।यद्यपि प्राच्य समालोचना में पाश्चात्य समालोचना का अनुकरण करने का प्रयास किया किंतु उसके बावजूद भी उसने अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाए रखा। भारतीय आलोचना परंपरा का प्रारंभ हम संस्कृत साहित्य से हुआ मान सकते हैं। आधुनिक हिंदी आलोचना के उद्भव से पूर्व हिंदी में भी संस्कृत के काव्य शास्त्रीय ग्रंथों की परंपरा में हिंदी के काव्य शास्त्र की रचना के प्रयास हो चुके थे। संस्कृत साहित्य में

आलोचना का प्रारंभ भरत मुनि द्वारा रचित 'नाट्यशास्त्र से हुआ माना जाता है और इसे ही प्रारंभिक काव्यशास्त्र के रूप में मान्यता प्राप्त है। नाट्यशास्त्र में विभिन्न तत्व विद्यमान थे जिसमें अभिनय उसका मूल विषय- वस्तु था और इसमें प्रधानतः रस पर विचार किया गया था। रस को अभिनय का मुख्य अंग माना जाता है और इसी पर विस्तृत आलोचना 'नाटयशास्त्र' में देखी जा सकती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं,रस के भाव विषयक आलोचना से ही संस्कृत साहित्य में आलोचना का प्रादुर्भाव होता है। संस्कृत आचार्यों की परंपरा में प्रमुख नाम भामह, आचार्य दंडी, आचार्य जगन्नाथ तथा विश्वनाथ का आता है। भामह ने काव्यालंकार नामक ग्रंथ की रचना की। आचार्य दंडी ने काव्यादर्श की रचना की और आचार्य जगन्नाथ ने रसगंगाधर लिखा ।

आचार्य विश्वनाथ द्वारा लिखित 'साहित्य दर्पण'अत्यंत महत्व का ग्रंथ साबित हुआ। हमें इस बात से अवगत होना चाहिए कि संस्कृत साहित्य में काव्य से तात्पर्य गद्य और पद्य रूप में रचित सृष्टि मूल क रचना से हैं जिसमें गद्य और पद्य कुछ भी संभव हो सकता है। उक्त आचार्यों द्वारा लिखे गए समस्त ग्रंथों में रस और अलंकारों का अद्भुत सामंजस्य है। इन ग्रंथों में काव्य की परिभाषा, काव्य के लक्षण तथा उनके प्रकारों की विशद विवेचना प्रस्तुत की गई है। इनमें अलंकारों की प्रधानता, रस की प्रधानता, ध्वनि और औचित्य की प्रधानता पर सम्यक विचार किया गया है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि आलोचना का प्रादुर्भाव वस्तुतः प्राचीन काल में ही हो गया था, किंतु वह सम्यक रूपेण अपने वर्तमान स्वरूप में उपस्थित नहीं थी। किसी भी विधा के विकास में कुछ न कुछ समय तो लगता ही है, किंतु उसका प्रारंभ बहुत

पहले अतीत की जड़ों में विद्यमान होता है। आलोचना के साथ भी यही बात लागू होती है। इस प्रकार आलोचना की विकास यात्रा संस्कृत साहित्य से प्रारंभ होकर अपने अगले पड़ाव की ओर अग्रसर होती है। जिसे पूर्ण विकास का अवसर हिन्दी साहित्य में मिला !

पृष्ठ १ का शेष...

हिंदी नाटक की यात्रा के...

ाल वर्मा,किशोरीदास वाजपेयी,वियोगी हरि,चतुरसेन शास्त्री आदि थे।हरिकृष्ण प्रेमी ने मध्यकालीन इतिहास से विषयवस्तु का चयन करते हुए लाजवाब ऐतिहासिक नाटकों की रचना की। लक्ष्मी नारायण मिश्र के प्रसिद्ध नाटकों में संन्यासी, कल्पतरु, मुक्ति का रहस्य,सिंदूर की होली

और आधीरात आदि प्रमुख हैं।प्रकाश, सेवापथ, त्याग और ग्रहण,गरीबी या अमीरी आदि सेठ गोविंददास के प्रमुख नाटक हैं।

सन् 1950 के बाद के नाटककारों के नाम प्रसादोत्तर युग में लिए जाते हैं।इस काल के नाटकों में जीवन का यथार्थ तो है ही,उनमें रंगमंचीयता एवं अभिनेयता भी उत्कृष्ट रूप में है।स्वतंत्रता के पश्चात जनमानस में एक नई चेतना का विकास हुआ।मानव मूल्यों में परिवर्तन आया।समाज का ढाँचा बिखरने ल गा।इस काल के प्रमुख नाटककार विष्णु प्रभाकर,जगदीश चंद्र माथुर,धर्मवीर भारती, लक्ष्मीनारायण लाल, रामकुमार वर्मा, मुद्राराक्षस,नरेंद्र कोहली,गिरिराज किशोर,डॉ शिवप्रसाद सिंह आदि हैं।विष्णु प्रभाकर ने अपने नाटकों में आधुनिक भावबोध से उत्पन्न जीवन संघर्ष को प्रस्तुत किया है।युगे-युगे क्रांति और टूटते परिवेश इनके प्रमुख नाटक हैं।जगदीश चंद्र माथुर नें हिंदी रंगमंच को अपने नाटकों के माध्यम से नई दिशा दी।कोणार्क,शारदीया,पहलाराजा और दशरथ नंदन उनके प्रसिद्ध नाटक हैं।

मोहन राकेश आधुनिक काल के अत्यन्त सशक्त एवं सफल नाटककार माने जाते हैं।यद्यपि उन्होंने केवल तीन नाटकों की ही रचना की है किन्तु उनका स्थान विशिष्ट है।आसाढ़ का एक दिन,लहरों के राजहंस तथा आधे-अधूरे उनके नाटक अमिट छाप छोड़ते हैं।आधे-अधूरे नाटक मध्यमवर्गीय जीवन की विडंबना दर्शाने

वाला नाटक है।धर्मवीर भारती कृत अंधायुग एक सशक्त कृति है जिसमें महाभारत के पात्रों के माध्यम से आधुनिक युग के संत्रास,तनाव,कुंठा और आवेश भरे जीवन को अभिव्यक्त किया गया है।मुद्राराक्षस के तिल चिट्ठा,तेंदुआ और योर्स फैथफुली बहुचर्चित नाटक हैं।सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के बकरी और अब गरीबी हटाओ नाटक भी प्रसिद्ध हुए।सुरेंद्र वर्मा,ज्ञानदेव,मन्नू भंडारी, रमेश उपाध्याय और भीष्म साहनी भी प्रमुख नाटककारों में गिने जाते हैं।भीष्म साहनी का कबिरा खड़ा बजार में शंकर शेष का एक और द्रोणाचार्य,देश दीपक का कोर्ट मार्शल और असगर वजाहत का जिस लाहौर नई देख्या भी काफी चर्चित रहे।

हबीब तनवीर के प्रमुख नाटक चरणदास चोर,मिट्टी की गाड़ी,आग की गेंद,दूध का गिलास,जहरीली हवा,कारतूस,परम्परा, शतरंज के मोहरे आदि हैं जो रंगमंच की दृष्टि से भी बहुत सार्थक और सफल हैं।

महिला नाटककारों में वर्तमान में एक महत्वपूर्ण नाम है उमा झुनझुनवाला का।इनके नाटक हैं-रेंगती परछाइयाँ,लम्हों की मुलाकात जिनका मंचन भी हो रहा है।इन्होंने बच्चों के लिए एकांकी भी लिखे हैं।

हिन्दी नाट्य साहित्य ऐतिहासिक, पौराणिक, समस्या प्रधान,गीति नाट्य,प्रतीकवादी नाटक,सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना के नाटक,राजनीतिक नाटक,नारीवादी नाटक तथा व्यंग्य नाटकों से समृद्ध हैं।

बाँकेलाल टंडन की गली,
वासलीगंज,
मिर्जापुर- 231001(उ.प्र.)

स्व0कन्हैया लाल स्मृति साहित्य सम्मान

संजय सक्सेना

यह सम्मान स्वर्गीय कन्हैयालाल श्रीवास्तव की स्मृति में 'शहर समता'(साप्ताहिक,दैनिक) समाचार पत्र के यशश्वी संपादक श्री उमेश श्रीवास्तव जी द्वारा शहर समता के मंच से प्रदान किया जाएगा।

स्व0 कन्हैया लाल श्रीवास्तव जी का जन्म 1924 ईस्वी में बहुता चकडाही,सुरियावां, वाराणसी जनपद में हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा गांव में ही प्राथमिक स्कूल में हुई।जूनियर हाई स्कूल की परीक्षा ज्ञानपुर स्थित स्कूल से पास की। आगे की शिक्षा के लिए इलाहाबाद की ओर उन्मुख हुए। वहीं पर 1944 ईस्वी में इंडियन प्रेस के लेखा-अकाउंट विभाग में नियुक्ति प्राप्त की। जहां से सरस्वती मासिक पत्रिका प्रकाशित हो रही थी। आपने सरस्वती के कई संपादकों को समय- समय पर वैचारिक सहयोग देने का प्रयास किया। 33 वर्षों तक निर्विकार भाव से, पूरी तन्मयता, कर्मण्यता से इंडियन प्रेस में सेवारत रहे। 24 फरवरी 2004 को इस दुनिया से परलोक सिधार गए।आपके यशस्वी पुत्र श्री उमेश चंद्र श्रीवास्तव जी ने आपके ही दिशानिर्देश में, आपके ही आशीर्वाद से20 मई 2001 ई0 में 'शहर समता' नाम से साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन शुरू किया और भारत सरकार द्वारा इस पत्र को मान्यता प्रदान की गई और इसकी लोकप्रियता ने दैनिक रूप में भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई हैं। आज शहर समता नाम साप्ताहिक और दैनिक(सितंबर2004से) दोनों क्षेत्रों में लोकप्रिय हो गया है। साप्ताहिक शहर समता साहित्य विशेषांक के रूप में अब तक 150 से अधिक गुमनाम साहित्यकारों को साहित्य की मुख्यधारा से जोड़ने का प्रयास किया है और लोगों के समक्ष उन साहित्यकारों को प्रस्तुत भी कराया है। इसी कारण शहर समता की डिमांड पूरे देश के विश्वविद्याल यों विदेशों में स्थित हिंदी सेवाओं के द्वारा की जा रही है और उसका साहित्य विशेषांक अत्यधिक लोकप्रिय है। कई साहित्यकार उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान से पुरस्कृत हो चुके हैं। जिनको भी शहर समता ने मंच उपलब्ध कराया, आज वे ही यशस्वी साहित्यकार के रूप में समाज में प्रतिष्ठित हो चुके हैं। इसी इसी कड़ी में शहर समता के यशस्वी संपादक उमेश चंद्र श्रीवास्तव जी अपने देव तुल्य पूज्य पिता स्वर्गीय कन्हैया लाल श्रीवास्तव की स्मृति में स्वर्गीय कन्हैयालाल स्मृति साहित्य सम्मान की घोषणा की है। जो कवियों, कथाकारों,नाटककारों की रचनाओं पर दिया जाता है ।

शहर समता - ब्यूरो प्रमुख

देहरादून ब्यूरो - निशा अतुल्य,
सतना ब्यूरो - डॉ ऊषा सक्सेना,
रीवां ब्यूरो - साधना तिवारी,
लखनऊ ब्यूरो - मंजु सक्सेना,
जबलपुर ब्यूरो - शैली सेठ,
लुधियाना ब्यूरो - श्रद्धा शुक्ला,
जौनपुर ब्यूरो - डॉ मधु पाठक,
हैदराबाद ब्यूरो -रीना प्रदीप कुमार,
भिलाई ब्यूरो - संध्या चंदेल,
गोरखपुर ब्यूरो - चित्रा श्रीवास्तव,
दिल्ली ब्यूरो - अफरोज़ अजीज,
तिनसुकिया गोलाघाट ब्यूरो - रंजना बिनानी,
प्रयागराज ब्यूरो - डॉ आकांक्षा पाल,
भीलवाड़ा ब्यूरो - डॉ राजमति पोखरना,
इंदौर ब्यूरो - आशा जाकड़,
शिलांग ब्यूरो - डॉ अनीता पंडा,
बिलासपुर ब्यूरो - स्मृति मिश्रा 'रीति,
रायपुर ब्यूरो - सीमा निगम,
कानपुर ब्यूरो - सीमा वर्णिका,
भोपाल ब्यूरो - दीपमाला तिवारी,
दमोह ब्यूरो- भावना शिवहरे,
मण्डला ब्यूरो - डॉ अर्चना जैन
बनारस ब्यूरो - सुनीता जौहरी,
आरा ब्यूरो - सिम्पल सिंह,
बिजनौर ब्यूरो - ऋतुबाला रस्तोगी,
पठानकोट ब्यूरो - क्षमा लाल गुप्ता,
सप्तरी नेपाल ब्यूरो - करुणा झा,
धम्तरी ब्यूरो - कामिनी कौशिक,
रामपुर ब्यूरो - चंद्रिका कुमार 'चांदनी',,
मुरादाबाद ब्यूरो - अभिव्यक्ति सिन्हा,
कटनी ब्यूरो - मीरा भार्गव,
पटना ब्यूरो - अंजू भारती

संस्थापक
स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 साधना श्रीवास्तव

सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
आरएनआई नं0 UPHIN/2001/3996

उप संपादक
डा0 अरूण कुमार मिश्रा
रचना सक्सेना

Mo. 9005239332
Email-shaharsamta@gmail.com

स्वत्वाधिकारी/मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा इण्डियन प्रेस (पलि.) प्रा0लि0, 36 पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए, (अनन्त भवन) कर्नलगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित।

इस अंक के प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा समस्त विवादों का निपटारा इलाहाबाद न्यायालय में ही होगा।

महाकुम्भ से मानवता का संदेश

दिव्य-भव्य-डिजिटल
एकता का महाकुम्भ

अमृत स्नान के दौरान संगम की धारा में करतब दिखाती महिला साधु

संगम नोज पर स्नान करने के लिए अपनी बारी के लिए प्रतीक्षारत अखाड़ों के संत

भूटान के महामहिम नरेश जिग्मे खेसर नामग्याल वांगचुक जी के साथ मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ

संगम तट पर त्रिवेणी में स्नान के उपरांत पूजा-अर्चना करते प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

संगम में स्नान के बाद मां गंगा की आरती करती कल्पवासी

संगम तट पर अमृत स्नान में शामिल होते विदेशी पर्यटक और संन्यासी

भारत की एकता के महायज्ञ महाकुम्भ-2025, प्रयागराज में आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने पवित्र त्रिवेणी संगम में पावन स्नान कर मां गंगा, मां यमुना और मां सरस्वती का शुभाशीष प्राप्त किया। प्रधानमंत्री जी ने भारत की जीवन रेखा, अध्यात्म और संस्कृति की सनातन स्रोत मां गंगा की विधि-विधान से पूजा-अर्चना कर समस्त देशवासियों के सुख, शांति और समृद्धि की कामना की।

-योगी आदित्यनाथ, मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

प्रयागराज के दिव्य-भव्य महाकुम्भ में आस्था, भक्ति और अध्यात्म का संगम हर किसी को अभिभूत कर रहा है। पावन-पुण्य प्रयागराज महाकुम्भ में पवित्र संगम में स्नान के बाद पूजा-अर्चना का परम सौभाग्य मिला। मां गंगा का आशीर्वाद पाकर मन को असीम शांति और संतोष मिला है। उनसे समस्त देशवासियों की सुख-समृद्धि, आरोग्य और कल्याण की कामना की।

-नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

अब तक 56 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं ने लगाई आस्था की डुबकी

- महाकुम्भ में भीड़ की स्थिति को देखते हुए मेला क्षेत्र में मार्ग परिवर्तन (डायवर्जन) व्यवस्था लागू, अलग-अलग जगहों पर 88 होल्डिंग एरिया की व्यवस्था
- सुचारु आवाजाही सुनिश्चित करने के लिए वन-वे व्यवस्था लागू
- बसंत पंचमी पर पवित्र त्रिवेणी संगम में साधु-संतों और श्रद्धालुओं ने किया अमृत स्नान
- अमृत स्नान पर सभी घाटों और अखाड़ों के साथ स्नान करने वाले श्रद्धालुओं पर हेलीकॉप्टर से हुई पुष्पवर्षा
- घोड़ों पर सवार होकर और पैदल चल रहे नागा साधुओं ने शस्त्रों के साथ अपनी युद्ध कला का प्रदर्शन किया
- अखाड़ों का नेतृत्व कर रहे नागा साधुओं के अद्भुत प्रदर्शन ने हर किसी को किया मंत्रमुग्ध
- संगम तट पर पुष्पवर्षा से अभिभूत संतों, संन्यासियों और श्रद्धालुओं ने लगाए जय श्री राम और हर-हर महादेव के नारे
- नागा संन्यासियों को देखने उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़
- महाकुम्भ में नागा संन्यासियों के साथ ही देश-विदेश के करोड़ों श्रद्धालु बने अमृत स्नान के साक्षी
- साधु-संतों ने की अमृत स्नान की व्यवस्थाओं की प्रशंसा
- हर-हर गंगे के जयघोष से गूंजा संपूर्ण महाकुम्भ क्षेत्र
- सुरक्षा के पुख्ता इंतजामों के बीच दिव्य और भव्य रहा अमृत स्नान
- सभी आलाधिकारियों ने मौके पर रहकर की व्यवस्थाओं की निगरानी
- महाकुम्भ का डिजिटल स्वरूप बना आकर्षण का केंद्र
- महाकुम्भ में देखने को मिल रही विविध संस्कृतियों की झलक
- अयोध्या में श्रद्धालुओं का 'बसंत', आंकड़ा एक करोड़ के पार, महाकुम्भ से श्रद्धालुओं के आने का सिलसिला जारी
- महाकुम्भ के तपस्वी नगर में दिगम्बर अनी अखाड़ों के साधकों ने आरंभ की पंच धूनी की कठिन तपस्या
- अमृत स्नान पर्व से शुरु हुई वैष्णव अखाड़ों की अद्भुत अग्नि स्नान साधना
- अमृत स्नान पर महाकुम्भ में दिखा सेवा और समर्पण का अद्वितीय संगम, श्रवण कुंभ से हजारों श्रद्धालु हुए लाभान्वित
- श्रद्धालुओं के आंख-कान की नि:शुल्क जांच के साथ उपकरणों का किया जा रहा वितरण
- प्रदेश भर में संचालित वृद्धाश्रमों के बुजुर्गों को महाकुम्भ में अमृत स्नान करा रही है प्रदेश सरकार
- कर्नाटक, गुजरात, महाराष्ट्र और उड़ीसा से करोड़ों की संख्या में संगम आये श्रद्धालु
- देश भर से आये श्रद्धालु महाकुम्भ की व्यवस्थाओं की कर रहे हैं तारीफ

—आगामी प्रमुख स्नान पर्व—

महाशिवरात्रि - 26 फरवरी, 2025

महाकुम्भ की व्यवस्था को साधु-संतों ने खूब सराहा

महाकुम्भ स्वयं ही अमृत स्नान है। मुगल शासन के दौरान जिसे शाही स्नान कहा जाता था, आज वैदिक संस्कृति में उसे अमृत स्नान के नाम से जाना जाता है। गंगा मात्र दर्शन से ही पापों से मुक्त करने की क्षमता रखती है, और हम यहां त्रिवेणी में उपस्थित हैं।

-महामंडलेश्वर आचार्य ज्योतिर्मयानंद गिरी महाराज, निरंजनी अखाड़ा

अमृत स्नान बहुत शांतिपूर्वक और उत्कृष्ट तरीके से संपन्न हुआ। इस कुम्भ मेला का उद्देश्य विश्व में शांति और एकता स्थापित करना है। सभी को इससे एक सीख लेनी चाहिए। यहां सभी जाति और धर्म के लोग एकत्रित होते हैं। एकता, समृद्धि और भाईचारे की भावना बनी रहे।

-पीठाधीश्वर स्वामी विश्वात्मानंद सरस्वती, अटल अखाड़ा

महाकुम्भ में बसंत पंचमी के दिन अमृत स्नान पर्व पर पूरे विश्व के कल्याण के लिए प्रार्थना करने का अवसर रहा। यहां सभी प्रकार के लोग आए हैं। प्रशासन द्वारा किए गए इंतजाम उत्कृष्ट हैं।

-महामंडलेश्वर विश्वेश्वरानंद सरस्वती महाराज, महानिर्वाणी अखाड़ा

बसंत पंचमी के अवसर पर 'अमृत स्नान' हो रहा है। मुझे नहीं लगता कि इससे पहले कभी कुम्भ में इतनी बड़ी संख्या में लोग आए होंगे। बच्चों और बुजुर्गों को पहले स्नान कराया जाना चाहिए। श्रद्धालुओं को सभी का ध्यान रखना चाहिए।

-आध्यात्मिक गुरु देवकीनंदन ठाकुर